SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.55

वर्तमान भारतीय शिक्षा में गौतम बुद्ध के नैतिक शिक्षण की प्रासंगिकता

बिन्दू कुमारी[1],डॉ0 अखिलेश पटेल[2]

[1]शोधर्थिनी, शिक्षा संकाय, रामनगर पी0 जी0 कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी, उ० प्र०
[2]एसोसिएट प्रोफेसर / शोध–निर्देशक, शिक्षा संकाय, रामनगर पी0 जी0 कॉलेज, रामनगर, बाराबंकी, उ० प्र०
Email: professorakhilesh@gmail.com

सारांश

वर्तमान वैश्वीकरण, मूल्य–संकट, प्रतिस्पर्धा, तनाव और हिंसात्मक प्रवृत्तियों से ग्रस्त शैक्षिक वातावरण में छात्रों के नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में गौतम बुद्ध की नैतिक शिक्षाएँ जैसे– करुणा, अहिंसा, सत्य, मैत्री, मध्यम मार्ग, ध्यान और सदाचार व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए उत्कृष्ट आधार प्रदान करती हैं। यह शोध पत्र समकालीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गौतम बुद्ध के नैतिक शिक्षण की प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बुद्ध के सिद्धांत छात्रों में न केवल नैतिक चरित्र–निर्माण को बढ़ावा देते हैं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य, अनुशासन, आत्मनियंत्रण, सामाजिक सद्भाव और शांतिपूर्ण विद्यालयी वातावरण स्थापित करने में भी अत्यंत प्रभावी हैं।

मुख्य शब्द : गौतम बुद्ध, मूल्य–आधारित शिक्षा, अष्टांगिक मार्ग, चरित्र–निर्माण, शांति–शिक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, आधुनिक भारतीय शिक्षा.

परिचय

21वीं सदी का भारतीय शैक्षिक परिदृश्य अनेक जटिल चुनौतियों के बीच निरंतर विकसित हो रहा है। वैश्वीकरण, प्रतिस्पर्धात्मक प्रवृत्तियों और तकनीकी क्रांति ने शिक्षा के स्वरूप को जहाँ एक ओर विस्तार दिया है, वहीं दूसरी ओर कई गंभीर समस्याओं को भी जन्म दिया है। आज की शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों का क्षरण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। छात्रों में ईमानदारी, सहानुभूति, सहयोग, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी मूलभूत मान्यताओं का ह्रास चिंताजनक स्थिति उत्पन्न कर रहा है। इसके साथ ही बढ़ती प्रतिस्पर्धा ने विद्यार्थियों पर मानसिक दबाव को और अधिक तीव्र कर दिया है, जिसके कारण तनाव, चिंता, अवसाद तथा भावनात्मक अस्थिरता जैसी समस्याएँ व्यापक रूप से उभर रही हैं। तकनीकी विचलन विशेषकर मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने छात्रों की एकाग्रता, आत्मनियंत्रण और वास्तविक सामाजिक संबंधों को कमजोर किया है। सोशल मीडिया पर अतिनिर्भरता, तुलना–आधारित सोच और त्वरित संतुष्टि की प्रवृत्ति विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार को प्रभावित कर रही हैं। इन परिस्थितियों से उपजे निराशा, चिड़चिड़ाहट तथा असहिष्णुता के परिणामस्वरूप छात्रों में हिंसात्मक और आक्रामक व्यवहार भी बढ़ रहा है।

इन गंभीर चुनौतियों के बीच शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन, परीक्षा–केंद्रित अधिगम या रोजगारोन्मुखता तक सीमित नहीं रह सकता। आधुनिक शिक्षा का मूल लक्ष्य एक सुसंस्कृत, संवेदनशील, संतुलित, जिम्मेदार और नैतिक मानव का निर्माण होना चाहिए। इसी संदर्भ में भारतीय दर्शन विशेषतः गौतम बुद्ध की नैतिक शिक्षाएँ आज के समय में अत्यंत प्रासंगिक और मार्गदर्शक सिद्ध होती हैं। गौतम बुद्ध का नैतिक दर्शन मानवता, करुणा, अहिंसा, मैत्री, सत्य, संयम, मध्यम मार्ग, सचेतना (Mindfulness) और भावनात्मक अनुशासन पर आधारित है। ये शिक्षाएँ न केवल आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करती हैं, बल्कि व्यवहारिक जीवन में शांति, समझ, संतुलन और आत्मनियंत्रण विकसित करने पर भी बल देती हैं। विद्यार्थी जीवन में इन मूल्यों का समावेश उन्हें बेहतर विचारक, संवेदनशील नागरिक और आत्मनुशासित व्यक्तित्व बनने में सहायता करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भी मूल्य–आधारित शिक्षा, नैतिकता, जीवन–कौशल, सामाजिकदृभावनात्मक अधिगम, बहुआयामी व्यक्तित्व–विकास और वैश्विक नागरिकता की अवधारणाओं पर विशेष महत्व दिया है। नीति में ध्यान, योग, कला–आधारित शिक्षा और नैतिक शिक्षण जैसे पहलुओं पर जोर दिया गया है, जो सीधे–सीधे बौद्ध नैतिक दर्शन से जुड़े हुए हैं। इस प्रकार, गौतम बुद्ध के दर्शन की प्रासंगिकता आधुनिक भारतीय शिक्षा में और अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि यह उन सभी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करता है जिनकी अपेक्षा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 करती है।

गौतम बुद्ध के नैतिक शिक्षणरू एक दार्शनिक आधार

गौतम बुद्ध का नैतिक दर्शन मानव जीवन के संतुलित, शांतिपूर्ण और विवेकपूर्ण संचालन के लिए एक सर्वव्यापी मार्गदर्शक स्वरूप रखता है। उनकी शिक्षाएँ पूरी तरह व्यवहारिक, तर्कसंगत और मानव–केंद्रित हैं, जो व्यक्ति के आचरण, विचार, मनोवृत्ति और सामाजिक जिम्मेदारी को गहराई से प्रभावित करती हैं। बुद्ध का नैतिक दर्शन किसी दंड या भय पर आधारित नहीं, बल्कि आत्मबोध, करुणा, संयम और विवेक पर आधारित है। शिक्षा के संदर्भ में ये सिद्धांत छात्र–जीवन में चरित्र निर्माण, अनुशासन, सामाजिक परिपक्वता और नैतिक निर्णय क्षमता का आधार प्रदान करते हैं।

1. पंचशील : नैतिक आचरण का मूल आधार

पंचशील बुद्ध नैतिकता के पाँच सार्वभौमिक सिद्धांत हैं, जो मनुष्य को नैतिक रूप से जिम्मेदार और व्यवहारिक रूप से अनुशासित बनाते हैं। इन नियमों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, मद्यनिषेध और ब्रह्मचर्य शामिल हैं। समग्र रूप से पंचशील का पालन विद्यार्थियों को नैतिक, संतुलित, अनुशासित और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशामें प्रेरित करता है।

2. अष्टांगिक मार्ग : संतुलित और नैतिक जीवन की पूर्ण संरचना

अष्टांगिक मार्ग बुद्ध दर्शन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नैतिक–आचरण ढाँचा है। यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में संतुलन, सम्यक विचार और सही कर्म की ओर मार्गदर्शन करता है। सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाक, सम्यक कर्म, सम्यक आजीविका, सम्यक प्रयास, सम्यक स्मृति और सम्यक समाधि। इस प्रकार अष्टांगिक मार्ग नैतिकता, मनोवैज्ञानिक संतुलन, निर्णय क्षमता और वैचारिक स्पष्टता के लिए एक संपूर्ण मार्गदर्शक बन जाता है।

3. करुणा और मैत्री : सामाजिक सामंजस्य की आधारशिला

बुद्ध की करुणा और मैत्रीभाव की शिक्षाएँ व्यक्ति को पूरे समाज के कल्याण से जोड़ती हैं। ये सिद्धांत विद्यार्थियों में दूसरों की पीड़ा समझने, सहयोग करने, सहानुभूति दिखाने और सकारात्मक संबंध बनाने की क्षमता विकसित करते हैं। विद्यालयी वातावरण में यह शांति, सौहार्द, टीमवर्क, परस्पर सम्मान और संघर्ष–निवारण को बढ़ावा देता है।

4. मध्यम मार्ग : जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन

बुद्ध का मध्यम मार्ग अतियों से बचने और संतुलित जीवन जीने की शिक्षा देता है। शिक्षा के संदर्भ में यह सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि न अधिक कठोर अनुशासन, न पूर्ण स्वतंत्रता, न अत्यधिक मोबाइलध्सोशल मीडिया, न पूर्ण निषेध, न केवल अध्ययन, न केवल मनोरंजन। इस संतुलन से छात्र एक स्वस्थ, नियंत्रित और उत्पादक जीवन जी सकते हैं। डिजिटल युग में यह सिद्धांत और भी उपयोगी बन जाता है।

5. ध्यान एवं सतर्कता : मनोवैज्ञानिक मजबूती और सीखने की क्षमता का विकास

ध्यान और सतर्कता आधुनिक शिक्षा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, मानसिक स्वास्थ्य और एकाग्रता बढ़ाने के सबसे प्रभावी साधनों में गिने जाते हैं। ये विद्यार्थियों में पूर्ण एकाग्रता, तनाव–नियंत्रण, मानसिक शांति, आत्म–जागरूकता और आत्मनियंत्रण विकसित करते हैं, जो सीखने की क्षमता, स्मरण शक्ति और कक्षा–व्यवहार को बेहतर बनाते हैं।

वर्तमान भारतीय शिक्षा में बुद्ध की नैतिक शिक्षाओं की प्रासंगिकता

वर्तमान भारतीय शिक्षा एक ऐसे परिवेश में विकसित हो रही है जहाँ मूल्य–क्षरण, तनाव, प्रतिस्पर्धा, तकनीकी विचलन, हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ और सामाजिक असंवेदनशीलता जैसी चुनौतियाँ लगातार बढ़ रही हैं। इन परिस्थितियों में गौतम बुद्ध की नैतिक शिक्षाएँ शिक्षा को मानवीय स्वरूप प्रदान करने तथा छात्रों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध हो रही हैं। बुद्ध का दर्शन मूल्यों, संयम, करुणा, शांति और विवेक पर आधारित है, जिनकी शिक्षा आज के समय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

- **मूल्य–शिक्षा को सुदृढ़ करने में :** आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में नैतिक मूल्यों का क्षरण एक गंभीर चुनौती बन चुका है। ऐसे समय में गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ छात्रों में आवश्यक नैतिक मूल्यों को विकसित और सुदृढ़ करने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं। बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अहिंसा, सत्यवादिता, ईमानदारी, सहयोग, अनुशासन और सामाजिक सद्भाव जैसे मूल्य छात्रों के आचरण को सकारात्मक दिशा प्रदान करते हैं।

- **छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को सुधारने में :** आज के छात्रों में तनाव, चिंता, अवसाद और ध्यानाभाव जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए बुद्ध की 'सतर्कता' और 'ध्यान' अत्यंत प्रभावी साधन सिद्ध हो रहे हैं। ध्यान मन की अशांति को दूर करता है, जबकि सतर्कता व्यक्ति को वर्तमान क्षण में स्थापित रहने की क्षमता विकसित करती है।

- **शांतिपूर्ण विद्यालयी वातावरण के निर्माण में :** बुद्ध की शिक्षा अहिंसा, करुणा और मैत्रीभाव पर आधारित है, जो विद्यालयी वातावरण को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ये शिक्षाएँ विद्यार्थियों को आपसी सम्मान, समझ और सहयोग का व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं।

- **चरित्र–निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास में :** विद्यार्थियों का सर्वांगीण व्यक्तित्व निर्माण शिक्षा का मूल उद्देश्य है। बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग सम्यक दृष्टि, सम्यक वाक और सम्यक कर्म छात्रों को सही सोच, सही बोलने और सही कर्म करने के लिए प्रेरित करता है। ये सिद्धांत विद्यार्थियों को विवेकपूर्ण निर्णय लेने, आत्मनियंत्रण विकसित करने और उचित आचरण अपनाने का मार्ग दिखाते हैं।

- **नैतिक निर्णय क्षमता के विकास मे ं:** बौद्ध नैतिकता तर्क, अनुभव और वैज्ञानिक सोच पर आधारित है। बुद्ध की शिक्षाएँ विद्यार्थियों को ''क्या सही है'' मात्र बताने तक सीमित नहीं, बल्कि ''क्यों सही है'' इसका तार्किक आधार भी प्रदान करती हैं। इस प्रकार छात्रों में नैतिक विवेक, जिम्मेदारीबोध, आत्मचिंतन और नैतिक निर्णय क्षमता विकसित होती है।

राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 में प्रासंगिकता

समकालीन भारतीय शिक्षा नीति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मुख्य उद्देश्य एक समग्र, मूल्य–सम्पन्न, विद्यार्थी–केंद्रित और बहुआयामी शिक्षा प्रणाली की स्थापना करना है। यह नीति न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता पर बल देती है, बल्कि छात्रों के नैतिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास को भी समान महत्व देती है। बुद्ध का नैतिक दर्शन जिसमें करुणा, सत्य, अहिंसा, संयम, सतर्कता और सम्यक दृष्टि जैसे मूल सिद्धांत शामिल हैं राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 की दिशा और उद्देश्यों के साथ प्रत्यक्ष रूप से मेल खाता है। इसलिए, बौद्ध शिक्षाएँ नए शिक्षा ढाँचे को सशक्त और प्रभावी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

- **मूल्य–आधारित शिक्षा :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल सूचना संचरण का माध्यम न मानकर जीवन–मूल्यों के विकास का प्रमुख साधन मानती है। सत्य, अहिंसा, करुणा, सहयोग, ईमानदारी और सामाजिक सद्भाव जैसे मूल्य गौतम बुद्ध की शिक्षाओं का केंद्रीय भाग हैं। इन मूल्यों का समावेश विद्यार्थियों में नैतिकता, संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टि विकसित करता है। इसलिए विद्यालयों में मूल्य–आधारित शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए बुद्ध का नैतिक दर्शन एक सशक्त आधार प्रदान करता है, जो आधुनिक शिक्षा के उद्देश्य "मानव निर्माण" को पूर्णता देता है।

- **जीवन–कौशल के विकास में योगदान :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों में समस्या–समाधान, निर्णय क्षमता, आत्मनियंत्रण, संघर्ष–प्रबंधन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता जैसे प्रमुख जीवन–कौशल विकसित करने पर विशेष बल देती है। बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग, विशेषकर 'सम्यक स्मृति' और 'सम्यक प्रयास', विद्यार्थियों को विवेकपूर्ण सोच, सही दिशा में प्रयास, भावनात्मक नियंत्रण और सकारात्मक निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है। इस प्रकार बौद्ध नैतिकता आधुनिक जीवन–कौशल शिक्षा का व्यवहारिक आधार बनती है।

- **कला–एकीकृत शिक्षण :** बौद्ध परंपरा में कला, ध्यान और सौंदर्यबोध का गहरा संबंध है। बुद्ध की शिक्षाएँ रचनात्मकता, संतुलन, आत्म–अभिव्यक्ति और मानसिक शांति को बढ़ावा देती हैं। राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 का कला–एकीकृत शिक्षण विद्यार्थियों में रचनात्मकता, भावनात्मक स्वतंत्रता और आत्म–चिंतन को प्रोत्साहित करता है, जो बौद्ध चिंतन के अनुरूप है। इससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक संवेदनशील, अर्थपूर्ण और सृजनात्मक बनती है।

- **सामाजिक–भावनात्मक अधिगम :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 छात्रों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को अत्यधिक महत्व देती है। बुद्ध की करुणा, मैत्रीभाव, उपेक्षा और समता की शिक्षाएँ विद्यार्थियों में सहानुभूति, भावनात्मक संतुलन, आत्मचिंतन, परोपकार और आत्मनियंत्रण जैसे कौशलों का निर्माण करती हैं। सामाजिक–भावनात्मक अधिगम के सभी प्रमुख तत्व भावनात्मक समझ, दूसरों को स्वीकार करना, सहयोग, और सामाजिक संवेदनशीलता प्रत्यक्ष रूप से बौद्ध मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों से जुड़े हैं।

- **ज्ञान–आधारित शिक्षा :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 श्ज्ञानश को सूचनाओं तक सीमित न रखकर उसे समग्र बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक विकास का माध्यम मानती है। बुद्ध के अनुसार ज्ञान का अर्थ है सही समझ (सम्यक दृष्टि) और सही उद्देश्य (सम्यक संकल्प), जो शिक्षा को व्यवहार में लागू करने पर बल देता है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रिय शिक्षा नीति 2020 के समग्र शिक्षा (holistic education) मॉडल से पूर्णतः मेल खाता है, जहाँ ज्ञान बहु–विषयक, व्यावहारिक और जीवन–उन्मुख होता है।

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

- **तनाव–रहित एवं स्वस्थ शिक्षण–पर्यावरण के निर्माण में :** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख लक्ष्य है– सुरक्षित, तनाव–मुक्त और मानसिक रूप से स्वस्थ सीखने का वातावरण उपलब्ध कराना। बुद्ध की शिक्षाओं में वर्णित ध्यान, सतर्कता और मध्यम मार्ग तनाव, चिंता, अवसाद और भावनात्मक असंतुलन को कम करने में अत्यंत प्रभावी हैं। विद्यालयों में सचेतनता आधारित अधिगम (mindfulness-based learning) कार्यक्रम विद्यार्थियों की एकाग्रता, भावनात्मक शांति और मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाते हैं, जिससे शिक्षा का संपूर्ण वातावरण सकारात्मक बनता है।

निष्कर्ष

वर्तमान भारतीय शिक्षा जिस दौर से गुजर रही है, उसमें नैतिक मूल्यों का ह्रास, मानसिक असंतुलन, सामाजिक असंवेदनशीलता और तकनीकी विचलन जैसी चुनौतियाँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इन परिस्थितियों में गौतम बुद्ध की नैतिक शिक्षाएँ न केवल समयानुकूल हैं, बल्कि शिक्षा के मानवीय स्वरूप को पुनर्स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। प्राचीन काल में जिन शिक्षाओं ने समाज को शांति, करुणा, संयम और समता की राह दिखाई थी, वही शिक्षाएँ आज के शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा–प्रणाली के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। बुद्ध का नैतिक दर्शन अहिंसा, सत्य, करुणा, मैत्रीभाव, मध्यम मार्ग, सतर्कता और सम्यक दृष्टि छात्रों के भीतर नैतिकता, आत्मनियंत्रण, भावनात्मक संतुलन और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करता है। आधुनिक विद्यालयों में यह दर्शन शांतिपूर्ण वातावरण निर्माण, सकारात्मक व्यवहार प्रबंधन, सामाजिक–भावनात्मक अधिगम और मानसिक स्वास्थ्य संवर्द्धन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। विशेष रूप से ध्यान और सतर्कता पर आधारित बौद्ध शिक्षाएँ तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याओं के समाधान में प्रभावी माध्यम प्रस्तुत करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल्य–आधारित शिक्षा, जीवन–कौशल, समग्र विकास, समावेशी शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य पर जिस बल को देती है, वह बौद्ध नैतिक विचारधारा से पूर्णतः मेल खाता है। इस प्रकार बुद्ध का दर्शन न केवल अतीत की धरोहर है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा–व्यवस्था के लिए भी एक व्यवहारिक, वैज्ञानिक और नैतिक आधार प्रदान करता है।

अतः यह निष्कर्ष स्पष्ट है कि यदि शिक्षा का उद्देश्य मानव निर्माण है, तो गौतम बुद्ध की शिक्षाएँ इस उद्देश्य को प्राप्त करने का एक सर्वोत्तम मार्ग प्रस्तुत करती हैं। उनके विचार विद्यार्थियों को न केवल अच्छे नागरिक बनाते हैं, बल्कि संवेदनशील, नैतिक, संतुलित और जागरूक मानव बनने की दिशा में भी प्रेरित करते हैं। इस प्रकार बुद्ध की नैतिक शिक्षाएँ समकालीन भारतीय शिक्षा को अधिक मानवीय, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनाने में अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक सिद्ध होती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आनंद, बालकराम (2018). बौद्ध नैतिकता और शिक्षा. नई दिल्ली : मानव प्रकाशन।
2. अशोक, रमाशंकर (2016). भारतीय शिक्षा में मूल्य–शिक्षा का आधार. वाराणसी : हिंदी पुस्तक मंडल।
3. उपाध्याय, शारदा नंद (2015). बौद्ध दर्शन और मानव मूल्य. दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास।
4. कुमार, विनोद (2020). "समकालीन शिक्षा में बौद्ध नैतिकता की प्रासंगिकता". भारतीय शिक्षा समीक्षा, 44(2), 40–52।
5. गोस्वामी, मीरा (2019). "विद्यालयी शिक्षा में ध्यान एवं सतर्कता का महत्वरू बौद्ध दृष्टिकोण से विश्लेषण". शोध विमर्श, 12(3), 60–70।
6. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP–2020). नई दिल्ली : शिक्षा मंत्रालय।

7. चक्रवर्ती, सुशांत (2018). "आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का विकास एवं बौद्ध चिंतन". भारतीय दर्शन पत्रिका, 38(4), 22–31।
8. जनार्दन, रमेश (2014). बौद्ध शिक्षा सिद्धांत. नई दिल्ली : प्रकाशन विभाग।
9. तथागत, नरेन्द्र (2017). "अष्टांगिक मार्ग और व्यक्तित्व विकास". शिक्षा संवाद, 15(1), 75–85।
10. तेराड, नारदा (2012). बुद्ध और उनकी शिक्षाएँ. मुंबई : बौद्ध मिशन प्रकाशन।
11. नायक, सुदर्शन (2019). "शैक्षिक दृष्टि से करुणा एवं मैत्रीभाव का महत्व". शिक्षण शोध पत्रिका, 10(2), 45–56।
12. पाण्डेय, सुभाष (2016). भारतीय दर्शन के प्रमुख प्रवाह. दिल्ली : विश्वविद्यालय प्रकाशन।
13. प्रभाकर, निर्मला (2021). "विद्यालयी अनुशासन में बौद्ध नैतिक शिक्षाओं का योगदान". नैतिक शिक्षा शोध पत्रिका, 22(3), 30–42।
14. बोधि, भिक्षु (2013). आर्य अष्टांगिक मार्ग : दुःख–निरोध का मार्ग. लंका : बौद्ध प्रकाशन संघ।
15. राहुला, वॉलपोला (2014). बुद्ध ने क्या सिखाया. दिल्ली : ज्ञान गंगा प्रकाशन। (हिंदी अनुवाद)
16. शर्मा, राकेश (2018). "सामाजिक–भावनात्मक अधिगम में बौद्ध दर्शन का प्रभाव". शैक्षणिक मनोविज्ञान पत्रिका, 19(1), 55–63।
17. सिंह, केदारनाथ (2015). शैक्षिक चिंतन और दर्शन. आगरा : विनीत पब्लिकेशन।
18. सिंह, मोहिनी (2020). "भारतीय शिक्षा में ध्यान–आधारित अधिगम की उपयोगिता". आधुनिक शिक्षा, 27(2), 12–21।
19. स्वामी, हरिहरानंद (2011). मध्यम मार्ग : जीवन और शिक्षा का सम्यक दृष्टिकोण. नई दिल्ली : अद्वैत प्रकाशन।

Cite this Article:

बिन्दू कुमारी,डॉ0 अखिलेश पटेल, "वर्तमान भारतीय शिक्षा में गौतम बुद्ध के नैतिक शिक्षण की प्रासंगिकता" Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.526- 531, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

बिन्दू कुमारी[1], डॉ0 अखिलेश पटेल[2]

For publication of research paper title

वर्तमान भारतीय शिक्षा में गौतम बुद्ध के नैतिक शिक्षण की प्रासंगिकता

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, (RPRI-3.89/ 6.89)

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.55